International Journal of Yogic, Human Movement and Sports Sciences 2018; 3(1): 204-205

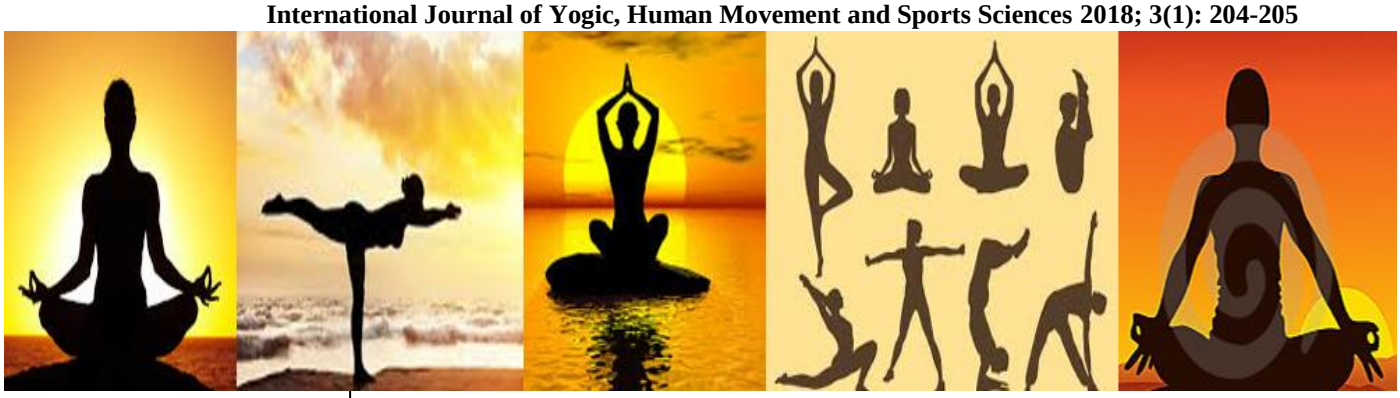

ISSN: 2456-4419
Impact Factor: (RJIF): 5.18
Yoga 2018; 3(1): 204-205
© 2018 Yoga
www.theyogicjournal.com
Received: 06-11-2017
Accepted: 07-12-2017

डॉ0 सुशीला कुमारी
सहायक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग,
महिला महाविद्यालय झोझूकलां,
चरखी दादरी, हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ0 सुशीला कुमारी
सहायक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग,
महिला महाविद्यालय झोझूकलां,
चरखी दादरी, हरियाणा, भारत

योग एवं काश्मीर शैव परम्परा में सामञ्जस्य

डॉ0 सुशीला कुमारी

प्रस्तावना

काश्मीर शैव परम्परा को सम्पूर्ण शास्त्रों की केन्द्रीय धुरि के रूप में जाना जाता है। यदि पातञ्जल योग पर सम्पूर्ण दृष्टि डालें तो सम्पूर्ण योगशास्त्र को व्यवस्थित रूप देने का कार्य इसी में देखा जा सकता है। इसके साथ ही यह प्रकृति का उद्भूत संयोग है कि विभिन्न काल धाराओं में विकसित होने के साथ–साथ काश्मीर शैव एवं पातजंल योग में एक सामञ्जस्य स्थापित होता है।

काश्मीर शैव परम्परा का विस्तृत स्वरूप एक स्थान से ही प्राप्त करना असम्भव–सा है। यहाँ विभिन्न प्रकार से इस परम्परा की केन्द्रीय साधना पद्धति और दार्शनिक चिन्तन को प्रेषित करने के लिए कुछ अन्य सहयोगी परम्पराओं का जन्म हुआ है। इस परम्परा में समय–समय पर विभिन्न काल खण्डों में जन्मे सम्प्रदाय इसके मौलिक स्वरूप को विस्तृत रूप में समझने में सहायक का कार्य करते हैं सभी सम्प्रदाय को जानने पर पता चलता है कि ये एक–दूसरे से पारिभाषिक शब्दावली व सिद्धान्तों को आपस में सहज की ग्रहण करते है। भेद यदि है तो योग प्रक्रिया एवं साधना–विधि में है या आस्था में। [1] स्पन्द, क्रम, कुल, प्रत्यभिज्ञा और त्रिक्–ये सभी सम्प्रदाय स्पन्द आदि प्रत्ययों पर आधारित होने के कारण ही पृथक् दिखाई देते है। वस्तुतः इनमें अभेद है भेद तो केवल दार्शनिक विचारधारा को अपने–अपने ढंग से नवीन रूप देने में है जो चिन्तन सारणी को दृढ़ता प्रदान करता है।

काश्मीर शैव परम्परा में किसी एक का विशेष अध्ययन करना अपने आप में एक विशिष्ट कार्य है। इनका मात्र विश्लेषण हमें इस दार्शनिक चिन्तन शैली को समझने की योग्यता प्रदान करता है। इसी वैशिष्ट्य के कारण यहाँ एक सम्प्रदाय के पारिभाषिक शब्द अन्यों के सिद्धान्तों एवं साधना परम्पराओं का मूल प्रत्यय कहा जा सकता है। जैसे–स्पन्द एक प्रमुख सम्प्रदाय के रूप में भी है और क्रम दर्शन में इसे कलन [2] प्रत्यभिज्ञा में विमर्श [3] और कुल दर्शन में अभिनवगुप्त इसे विसर्ग [4] के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार निष्कर्षतः सम्प्रदायों पर गहन चिन्तन किया जाए तो जहाँ एक ओर वे दार्शनिक मतों को दर्शाते हैं तो वहीं दूसरी ओर योगसाधना को। उदाहरण के लिए स्पन्द दर्शन। स्पन्द कारिका में उन्मेष–निमेष की शब्दावली में व्यक्त किया गया है। उन्मेष चेतना के पूर्ण विकास की स्थिति है जिसमें सम्पूर्ण विकल्पों का नाश हो चुका है। इस स्थिति में चित्त को जिस पूर्णता का आस्वाद् होता है वहीं सीमित प्रमाता और उसके स्वस्वभाव के मध्य एकत्व लाभ की स्थिति है। [5] शास्त्रीय रूप से योगसाधना की इस पद्धति को खोजना असम्भव है फिर भी पांतजल योग में चित्तवृति निरोध वाली स्थिति में कुछ भिन्नता लिए हुए योग की अवधारणा यहाँ पर दार्शनिक पृष्ठभूमि में गुप्तरूप से प्रकट होती है।

योगसूत्र में वर्णित वृत्ति–व्यापार विकल्प जलवत् है। उसके क्षय के बाद की ही स्थिति पर यहाँ एकमत नही है। इस उन्मेष दशा का घटक निमेष भी है जिसमें इन्द्रिय व मन की सभी बाह्य क्रियाएँ विरमित हो जाती हैं और भेदात्मक चेतना उस स्पन्द तत्व के निमेष में निमग्न हो जाती है। सामान्य जीवन में इस स्थिति का अनुभव हम तीव्र संवेग के उदय की स्थिति में भी कर सकते हैं। उन्मेष, निमेष लय एवं उदय रूप से जागतिक गति के दो बिन्दुओं के भी पर्याय हैं। इस प्रकार स्पन्दन क्रिया जो कि सृष्टि व लय की सतत् प्रक्रिया की वाचक है, उन्मेष व निमेष के प्रत्ययद्वय से व्याख्या [8] होती है। उन्मेष व निमेष रूपी शक्ति चक्र के वैभव का जो विश्व वैचित्र्य के रूप में निरन्तर रूप स`चल रहा है, उस पर एकाग्रचित होकर साधना की उच्च अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है। पतंजलि इसी को क्षण एवं क्रम में संयम जनित विवके ज्ञान [9] व तारक ज्ञान[10] के द्वारा बताने का प्रयत्न करते हैं। इस तरह की स्थिति एवं संदर्भ यथावत् नहीं मिलते फिर भी हम प्रयास कर रहे हैं। पतंजलि योग की व्यवस्थित रूपरेखा से काश्मीर शैव परम्परा में योग को समझने व इसके द्वारा कुछ स्थितियों में दो भिन्न धाराओं के मध्य संवाद स्थापित का है। इस कारण से ही इन बिन्दुओं पर शोध दृष्टि से ध्यान देना अत्यावश्यक है।

स्पन्द शास्त्र की धारणा पर विचार करे तो ये सारी अवस्थाएँ जिनका विश्लेषण ऊपर हो चुका है सभी चित्तोतीर्ण दशाएँ हैं, परन्तु योगशास्त्र स्वतन्त्र रूप से इस प्रकार की अवस्था को प्रकट नहीं करता है। योगसूत्र में तो मात्र कैवल्य [11] की स्थिति को ही चिन्तोतीर्ण अवस्था कहा है जबकि काश्मीर शैव परम्परा में यह योग ही एक अवस्था है। इसी तरह से काश्मीर शैव परम्परा में यह योग की सम्प्रदाय ही नही अपितु सभी प्रमुख ग्रन्थों में सहज योग प्रक्रियाओं का वर्णन मिलता है। ये विधियाँ योगसूत्र से भिन्न होते हुए भी योगसूत्र एवं काश्मीर शैव परम्परा में वर्णित योगसाधना के बीच की छोटी–छोटी श्रृंखलाओं को जोडने का प्रयास करती हैं। योगसूत्र यदि चित्तभूमि पर आधारित शास्त्र है तो काश्मीर शैव योगसाधना का चित्तोतीर्ण अवस्था की अभिव्यक्ति और अनुभव की परम्परा है।

इसी क्रम में यदि विज्ञान भैरव पर नजर रखे तो ऐसा लगता है कि इनमें काश्मीर शैवीय योगशास्त्र की सहज योग विधियों [12] का पूर्ण स्वरूप जानने का विज्ञान वर्णित किया गया है। यहाँ पुनः यदि योगसूत्र के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो विज्ञान भैरव योग का क्रमिक वर्णन न कर प्रत्येक धारणा विशेष द्वारा भैरवत्व की प्राप्ति का उपाय बतलाया है। यह भैरवी समावेश इसका मौलिक चिन्तन है जो वस्तुतः चित्तोतीर्ण अवस्था का ज्ञापक है। इसके प्रत्येक श्लोक में सूत्रात्मक रूप से योग का विस्तृत अध्ययन मिलता हैं विद्वानों [13] के अनुसार यह [12] प्रकार की धारणाओं को प्रस्तुत करता है जो योगसूत्र में वर्णित धारणा[14] से सर्वथा भिन्न यहाँ धारणा योगसूत्र में वर्णित समाधि को भी अन्तर्निहित किए हुए है। [15] इसके साथ ही ध्यान भी निश्चल, निराकार एवं निराश्रय [16] बुद्धि की स्थिति है जो देश विशेष में एकतानता [17] से बहुत भिन्न है।

निष्कर्षतः योगसूत्र के सन्दर्भ में जब हम काश्मीर शैव परम्परा में योग को समझने का प्रयास करते है तो ऐसा देखा गया है कि काश्मीर शैव की व्यापक योगसाधना वृत्त से योगसूत्र विभिन्न रूप से भिन्न है परन्तु काश्मीर शैवीय योग को समझने के लिए अत्यावश्यक है। काश्मीर शैव जहाँ चित्तोतीर्ण अवस्था का वर्णन करता है वही दूसरी ओर योगसूत्र चित्त एवं उसकी व्यापकता को विस्तृत रूप से अभिव्यक्त करता है। इसलिए योग को समझना है तो काश्मीर शैव परम्परा को समझना पडेगा और यदि काश्मीर शैव परम्परा को समझना है तो योग को समझना पड़ेगा क्योंकि ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

सन्दर्भ सूची

1. रस्तोगी नवजीवन 2002 काश्मीर, शिवाद्वयवाद की मूल अवधारणएँ, मुंशीराम मनोहरलाल, पब्लिकेशन्स नई दिल्ली पृष्ठ–13
2. रस्तोगी नवजीवन 2002, काश्मीर शिवाद्वयवाद की मूल अवधारणाएँ पृष्ठ –61
3. ईश्वर प्रत्यभिज्ञा कारिका–1.5 13–14
4. परात्रिंशिका विवरण, पृष्ठ – 207
5. रस्तोगी नवजीवन 2002 पृष्ठ – 60
6. योगसूत्र – 1.2
7. स्पन्दकारिका – 22.
8. स्पन्दकारिका विवर्षत्ति, पृष्ठ –5
9. योगसूत्र – 3.52
10. योगसूत्र – 3.54
11. योगसूत्र – 4.34
12. द्विवेदी वज्रवल्लभ, विज्ञानभैरव, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, उपोद्धात
13. द्रष्ट्व्य, आनन्दभट्टकष्त विज्ञानकौमुदी
14. योगसूत्र – 3.1
15. तुलना करें, रस्तोगी नवजीवन, अभिनवगुप्त का तंत्रागमीय दर्शनः इतिहास संस्कर्षति सौन्दर्य और तत्व चिन्तन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर पृष्ठ –286
16. विज्ञानभैरव – 143
17. योगसूत्र – 3.2